| | ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 3, May 2022 |

महाराणा कुम्भा की साहित्य-सर्जना

डॉ. लता शर्मा

सह आचार्य गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय अलवर

वेदा यन्मौलिरत्नं स्मृति विहितमतं सर्वदा कण्ठभूषा मीमांसे कुंडले द्वे हृदि भरतमुनि व्याहृतं हारवल्ली। सर्वांगीणं प्रकृष्ट... परं राजनीतिप्रयोगाः सार्वज्ञ बिभ्रदुच्चैरगणित-गुण-भूर्भासते कुम्भभूपः ।।

"कला और संस्कृति के महान् उन्नायक, उदग्र साहित्यिक प्रतिभा के धनी, हिन्दू धर्म के तेजस्वी रक्षक, अपराजित योद्धा, अप्रतिम संगीतशास्त्री तथा वीणावादक, स्थापत्य की अनुपम कृतियों से सम्पूर्ण मेवाड भूमि के अलंकर्त्ता, 'युद्ध-धर्म-दया-दान इस चतुर्विध वीर्य से अलंकृत, शस्त्र और शास्त्र, शौर्य तथा औदार्य, वीर्य और धैर्य के धनी, महान् कलानुरागी, पराक्रम एवं कलासाधना, क्षात्र, ओज, ब्राह्म, प्रसाद और रसिक जनोचित माधुर्य के उदात्त प्रतीक, महाप्राण, महाशील, महाशूर और महान् कलानुरागी, अद्‌भुत शासक शिरोमणि महाराणा कुम्भा इन सभी दैवी गुणों से सम्पन्न होने के साथ अप्रतिम संगीत तथा महान् साहित्यिक प्रतिभा के धनी भी थे।"

यद्यपि वक्ता की यह प्रशस्ति ऐसी प्रतीत होती है मानो नायक के गुणों को अतिरञ्जित तथा अलौकिक स्वरूप प्रदान करते हुए प्रस्तुत किया जा रहा है, किन्तु यह परम् सत्य है कि महाराणा कुम्भा में इन सभी विशेषताओं का अद्‌भुत समन्वय था ।

अद्‌भुत व्यक्तित्व के धनी कुम्भा का जन्म सुविख्यात सूर्यवंश में हुआ, गुहिल वंश का प्रथम शासक बापा रावल (728 ई-764 ई.) था। 1215 ई. में इस ही वंश में जैत्रसिंह, तेजसिंह (1253 ई.-1268 ई.), समरसिंह 1268 ई-1302 ई.) उसके बाद रत्नसिंह दो वर्ष शासक रहे। गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा के हम्मीर 1326 ई. में पुनः मेवाड़ पर स्थापित हुए। उनका पुत्र खेता 1364 ई. में फिर लाखा लगभग 1419 ई. तक शासक रहा उसके पश्चात् उनके पुत्र मोकल ने शासन सम्भाला और मोकल के पुत्र महाराणा कुम्भा हुए।

कुम्भा ने निरन्तर युद्ध झेलते हुए मेवाड़ को अपने शासन काल में स्थिर किया। अनेकों किलों का निर्माण कर उसे सुरक्षित किया। उस समय विद्वानों को प्रश्रय देते हुए संगीत, साहित्य, स्थापत्य आदि का भरपूर संरक्षण और संवर्धन किया। न केवल विद्वानों ने वरन् स्वयं कुम्भा ने भी साहित्य - सर्जना की।

कृतित्व

महाराणा कुम्भा का स्वरचित ग्रन्थ-भण्डार विशाल है, विशेषतः निरन्तर युद्धरत कर्मठ शासक होने के सन्दर्भ में। लगभग 15 ग्रन्थों के उस विशाल भण्डार में यद्यपि तभी रचनाएँ महत्वपूर्ण है तथापि उनमें सर्वाधिक विशिष्ट स्थान संगीतराज का ही है।

संगीतराज मूलतः संगीत विषयक ग्रन्थ है जिसमें कुम्भकर्ण द्वारा संगीत के भिन्न-भिन्न विषयों यथा पाठ्य गीत, पाद्य, नृत्य तथा रस को मुख्य बिन्दु बनाकर सम्मिलित किया है। संक्षेप में 'संगीतराज का परिचय इस प्रकार है-

(1) पाठ्यरत्नकोश।
(2) गीतरत्नकोश।
(3) वाद्यरत्नकोश।
(4) नृत्यरत्नकोश।
(5) रसरत्नकोश।

इन कोशों के अन्तर्गत उल्लास एवं उनके अन्तर्गत परीक्षणों का परिचय निम्नलिखित हैं : -

(1) **पाठ्यरत्नकोश–**

अनुक्रमणिकोल्लास	पदोल्लास	छन्दोल्लास	अलंकारोल्लास
कर्तृ प्रशंसापरीक्षण	पदपरीक्षण	अनुष्टुप् परीक्षण	उद्धेश परीक्षण
आरम्भसमर्थन परीक्षण	वाक्य परीक्षण	वृत्त परीक्षण	लक्षण परीक्षण
संगीत-स्तुति परीक्षण	संज्ञा परीक्षण	आर्यावलोकन परीक्षण	अलंकार परीक्षण
अनुक्रमणिका परीक्षण	परिभाषा परीक्षण	प्रस्तारपरिपाटी परीक्षण	गुणदोष परीक्षण

(2) **गीतरत्नकोश-**

स्वरोल्लास	रागोल्लास	प्रकीर्णकोल्लास	प्रबन्धोल्लास
स्थानादिपरीक्षण	ग्राम-रागपरीक्षण	वाग्गेयकारपरीक्षण	गीतपरीक्षण
साधारणपरीक्षण	रागांग-परीक्षण	शब्दभेद-परीक्षण	सूड-आलिपरीक्षण
वर्णालंकारपरीक्षण	भाषांगपरीक्षण	गमकपरीक्षण	प्रकीर्ण प्रबन्ध परीक्षण
जातिपरीक्षण	क्रियांगपरीक्षण	स्थायवागपरीक्षण	प्रबन्धपरीक्षण

(3) **वाद्यरत्नकोश-**

ततोल्लास	सुषिरोल्लास	घनोल्लास	अवनद्धोल्लास
एकतंत्रीपरीक्षण	वंशपरीक्षण	मार्गतालपरीक्षण	पुष्करवाद्यपरीक्षण
नकुलादिपरीक्षण	स्वरोत्पत्तिपरीक्षण	देशीतालपरीक्षण	पाटपरीक्षण
मत्तकोकिलापरीक्षण	गुणदोषपरीक्षण	ताल प्रत्ययपरीक्षण	वाद्यप्रबन्ध परीक्षण
किन्नरीपरीक्षण	पावादिपरीक्षण	तालालक्षणपरीक्षण	पटहादिपरीक्षण

(4) **नृत्यरत्नकोश-**

अंगोल्लास	चार्युल्लास	करणोल्लास	प्रकीर्णकोल्लास
अंगपरीक्षण	स्थानकपरीक्षण	शुद्धकरणपरीक्षण	वृत्तिपरीक्षण
प्रत्यंगपरीक्षण	प्रत्यंगपरीक्षण	शुद्धचारीपरीक्षण	देशीकरणपरीक्षण
उपांगपरीक्षण	देशीचारीपरीक्षण	अंगपरीक्षण	लास्यांगपरीक्षण
आहार्यपरीक्षण	मण्डलपरीक्षण	रेचकपरीक्षण	पात्रलक्षणपरीक्षण

(5) **रसरत्नकोश-**

रसोल्लास	विभावोल्लास	अनुभावोल्लास	संचार्युल्लास
रसस्वरूपपरीक्षण	नायकपरीक्षण	अनुभावपरीक्षण	निर्वेदपरीक्षण
रसतत्वपरीक्षण	नायिकापरीक्षण	अवस्थापरीक्षण	भावावस्थानपरीक्षण
रसाश्रयपरीक्षण	चेष्टादिकपरीक्षण	सात्विकपरीक्षण	रससंकरपरीक्षण
रसलक्षणपरीक्षण	उद्दीपनपरीक्षण	प्रवासादिपरीक्षण	ग्रन्थसमाप्तिपरीक्षण

इस प्रकार इस सम्पूर्ण ग्रन्थ में पाँच कोश, बीस उल्लास, अस्सी परीक्षण, सोलह सहस्र श्लोक तथा बत्तीस सहस्र पंक्तियाँ है। संगीत की दृष्टि से यह पूरा ग्रन्थ अत्यन्त विशिष्ट है तथापि इसे पर्याप्त प्रचार नहीं मिला। परवर्ती संगीत ग्रन्थों में भी इसका उल्लेख नहीं मिलता। सोमनाथ के रागविबोध में द्वितीय विवेक के श्लोक 8 की टीका में अवश्य 'संगीतराज' पद मिलता है।

| | ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 3, May 2022 |

आलोड्याखिलभारती विलसितं संगीराजं व्यधात
औद्धत्यावधिरङ्गसा समतनोत् सूडप्रबन्धाधिपम् ।
नानालङ्कृतिसंस्कृता व्यरचयच्चण्डीशतव्याकृतिं
वागीश जगतीतलं कलयति श्रीकुम्भदम्भात् किल्।। 157 ।।

येनाकारि मुरारिसंगीतरसप्रस्यन्दिनी नन्दिनी
वृत्तिव्याकृति चातुरीभिरतुला श्रीगीतगोविन्दके।
श्रीकर्णाटक मेदपाट सुमहाराष्ट्रादिके योदय- द्वाणीगुम्फमयं
चतुष्ट्यमयं सन्नाटकानां व्यधात् ।। 158 ।।

चित्तौड़ के कीर्तिस्तम्भ की प्रशस्ति (मंगसिर बदी 5 सं.-1517 वि.) में महाराणा कुम्भा की निम्न रचनाओं का श्लोक संख्या-157 एवं 158 में उल्लेख किया गया है -

1. संगीतराज।
2. सूडप्रबन्ध ।
3. चण्डीशतक वृत्ति।
4. गीतगोविन्द की वृत्ति।
5. चार नाटक।

इसके अतिरिक्त भी कतिपय ग्रन्थ कुम्भा के नाम से उपलब्ध होते हैं जो सम्भव है कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति के पश्चात् रचे गए -

1. कामराज रतिसार शतक।
2. गीतगोविन्द की मेवाड़ी टीका।
3. संगीतक्रमदीपिका।
4. संगीतरत्नाकर टीका।
5. वाद्य प्रबन्ध।
6. गीत गोविन्द ।
7. कुम्भस्वामी मन्दार।
8. एकलिङ्गाश्रय।
9. दर्शनसंग्रह।
10. हरिवार्तिक।
11. शिल्पशास्त्र विषयक ग्रन्थ।

1. **सुडप्रबन्ध** -

इस ग्रन्थ की रचना का उल्लेख कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति तथा संगीतराज आदि में मिलता है। इसकी रचना गीतगोविन्द के संगीतात्मक विवेचनार्थ की गई थी, पाण्डुलिपि में चारों ओर रागों सहित आलाप के टिप्पण लिखे मिलते हैं। संगीत की दृष्टि से इसमें विभिन्न पदों के साथ प्रयुक्त राग, ताल और वाद्य यंत्रों का भी निर्देश है। यह गीत गोविन्द पर अतिरिक्त प्रबन्ध के रूप में रचा गया है और इसका उल्लेख समिधेश्वर महादेव के समीप निर्मित विजयस्तम्भ के शिलापट्टांकित प्रशस्तिलेख में भी मिलता है।

| | ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 3, May 2022 |

अथ स्वोपल्न सूडस्य विवृत्तिं विवृणे स्फुटाम् ।

अष्टाविंशति संख्याकैः सः प्रबन्धैर्निबध्यने ।।

2. **चण्डीशतक वृत्ति** -

इस कृति का उल्लेख भी कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति में मिलता है। इसकी दो प्रतियां प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर में मिली, जिसे प्रकाशित है करवाया गया 1968 में।

कुम्भा ने चण्डीशतक के 101 पद्यों पर वृत्ति की रचना की। इसमें हमीर से कुम्भा पर्यन्त वंशवर्णन भी उपलब्ध है। रस. भाव, अनुभाव, व्यभिचारी एवं व्याकरणगत विशेषताओं पर विशेष टिप्पणी करते हुए सारगर्भित, विद्वतापूर्ण टीका लिखी गई हैं।

3. **गीतगोविन्द-वृत्ति-रसिकप्रियाः** -

कुम्भा को जयदेवकृत गीत गोविन्द बहुत प्रिय था एतदर्थ उन्होंने सुडप्रबन्ध के साथ रसिकप्रिया जैसी भावपूर्ण टीका की रचना की। इसका प्रथम प्रकाशन निर्णय सागर प्रेस से 1899 में किया गया जो अब अनुपलब्ध है। वर्तमान में चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला का गीतगोविन्द का संस्करण रसिकप्रिया टीका सहित उपलब्ध है। टीका से कुम्भा के गहन एवं विस्तृत ज्ञान का प्रकाशन होता है। कृष्ण एवं राधा के प्रणय कथानक सम्बन्धी पद्यों पर कुम्भा ने अलंकार, राग, रागिनियाँ, छन्द, नायक, नायिका , रीति , वृत्ति आदि का विस्तृत वर्णन किया है। रसिकप्रिया में अत्यन्त मृदुल भावों की भावपूर्ण अभिव्यक्ति है और मार्मिक एवं विद्वत्तापूर्ण व्याख्या है।

संगीतराज में कुम्भा ने सुड़प्रबन्धों के शुद्ध व सालग दो परम्परागत भेदों के अतिरिक्त मिश्र प्रबन्ध की जो 28 उपभेद सहित उद्भावना की है, उसे रसिकप्रिया में लक्षण सहित अभिव्यक्त किया है। रसिकप्रिया में पदों की जयदेव द्वारा वर्णित श्रृङ्गार व्यवस्था को स्पष्टता से तथा क्लिष्ट पदों की सरलता से अभिव्यक्ति की गई है। कुम्भा का राग-निर्धारण और व्याख्या इसके व्यावहारिक प्रयोग को इंगित करता है। अनेक स्थानों पर राग-ताल का निर्धारण जयदेव से भिन्न है , जो उनकी मौलिकता एवं क्रांतिकारी विचारधारा का प्रतीक है।

श्री वासुदेवचरणाम्बुज भक्तिलग्नचेता महीपतिरसौ स्वरपाठतेनान।
धातूननिन्द्य जयदेवकवीन्द्र गीतगोविन्दकं व्यरचयत् किल् नव्यरूपान् ॥

इसलिए ही कुम्भा के लिए 'अभिनवभरताचार्य' विरुद का प्रयोग किया जाता है और वह सार्थक भी है।

गीतगोविन्द के संगीतमय रूप को संगीतशास्त्र की भाषा में स्फुट करने का काम एकमात्र कुम्भा ने ही किया है।

4. **चार नाटक**-

कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति में चार नाटकों की कुम्भा द्वारा रचना का उल्लेख मिलता है। ये कर्णाटी, महाराष्ट्री, मेवाड़ी तथा संस्कृत भाषा में लिखे गए थे। कहीं-कहीं मेदपाटी भाषा का उल्लेख भी मिलता है। इनमें से कोई भी नाटक आज उपलब्ध नहीं है।

5. **कामराज रतिसारशतक** -

इस ग्रन्थ में कुल 155 श्लोक हैं और छः अंग हैं।
जात्यादिवर्णनं नाम प्रथमं अंगं -श्लोक 1-51 तक।

चन्द्रकला प्रीतिवर्णन नाम द्वितीयं अंगं- श्लोक 53-60 तक।

- प्रकृतिसत्वादिवर्णनं नाम तृतीयं अंग- श्लोक 61-90 तक।

बाह्यसुरतादिवर्णन नाम चतुर्थ अंगं - श्लोक 91-112 तक।

- सुरतभेदानाम् पंचमं अंगं - श्लोक 113-129 तक।

- भार्यापरदारिक नाम षष्ठं अंगं - श्लोक 130-155 तक।

इसका रचनाकाल 1518 संवत् तदनुसार 1461 ई. बताया गया है।

| | ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 3, May 2022 |

6. **गीतगोविन्द की मेवाड़ी टीका** -

गीतगोविन्द तथा संगीत के प्रति कुम्भा की विशेष रूचि के कारण ही कुम्भा ने मेवाड़ी भाषा में टीका लिखी। यह प्रकाशित नहीं, पाण्डुलिपि में ही संरक्षित है। उसकी दो पाण्डुलिपियाँ अनूप संस्कृत संग्रहालय बीकानेर में एक प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर एवं एक उदयपुर में उपलब्ध है। इसकी भाषा मूलतः मरूगुर्जर' है और मरू भाषा अध्ययन की दृष्टि से यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। 160 पत्रकों की पाण्डुलिपि में चित्र भी अंकित है।

7. **संगीतक्रमदीपिका**-

रसिकप्रिया के तीसरे सर्ग में इसकी रचना का उल्लेख है. किन्तु इसकी कोई पाण्डुलिपि वर्तमान में उपलब्ध नहीं है।

8. **संगीत रत्नाकर की टीका** -

संगीतरत्नाकर के आनन्दाश्रम संस्करण के द्वितीय खण्ड के परिशिष्ट में टीकाकारों में कुम्भा का नाम मिलता है, किन्तु पाण्डुलिपि उपलब्ध नहीं है। संगीतराज की सम्पादिका डॉ. प्रेमलता शर्मा के अनुसार संगीतक्रमदीपिका ही संगीतरत्नाकर की टीका है।

इसके अतिरिक्त वाद्यप्रबन्ध, 'गीतगोविन्द', 'कुम्भ स्वामी मन्दार, एकलिङ्गाश्रय, दर्शन संग्रह' तथा 'हरिवार्तिक आदि ग्रन्थों का कर्तृत्व कुम्भा के नाम से उपलब्ध होता है लेकिन किसी भी संग्रहालय में उनकी प्रतियाँ प्राप्त नहीं होती।

9. **शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थ** -

महाराणा कुम्भा ने जय तथा अपराजित के नियमों के अनुसार कीर्तिस्तम्भ निर्माण विषयक ग्रन्थ लिखा जिसे 11.5 इंच लम्बी तथा 9.5 इंच चौड़ी शिला पर उत्कीर्ण कर चित्तौड़ के कीर्ति स्तम्भ के निचले हिस्से में लगाया गया। कालान्तर में वह लम्बाई से टूट गया और अब उदयपुर के विक्टोरिया हॉल में संरक्षित है। इसका समय अवश्य ही 1505 सं. से पूर्व का होना चाहिए ।

एकलिङ्ग जी की मेवाड़ी भाषा में भी स्तुतियाँ कुम्भकर्ण द्वारा रची गई थी जो लिपिबद्ध तो नहीं है किन्तु श्रवण-परम्परा से निरन्तर गेय रहीं ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कुम्भा की इतनी रचनाओं में से केवल पाँच या छः रचनाएँ उपलब्ध हैं और वे भी अधिकांशतः पाण्डुलिपि के रूप में ही हैं, प्रकाशित नहीं अर्थात् जन-सामान्य को उपलब्ध नहीं है। केवल एक तिहाई रचनाओं की उपलब्धि ही उनके व्यक्तित्व के उन महत्त्वपूर्ण गुणों यथा-विद्वत्ता, साहित्यविद्, षड्विद्याओं का ज्ञाता, श्रेष्ठ कलाकार आदि को प्रमाणित करती हैं तब यदि सम्पूर्ण रचनाओं का पूर्ण अध्ययन सम्भव हो पाए तो कुम्भा साहित्य जगत् के जिस उच्च शिखर पर आसीन होंगे, वह सहज अनुमेय है। इतिहास तो कुम्भा को जानता है। किन्तु साहित्य जगत् तो उनसे अनभिज्ञ ही है। यदि निरपेक्ष भाव से दृष्टिपात करें तो कुम्भा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र रूप से अध्ययन करना कठिन नहीं तो श्रमसाध्य अवश्य है। इस भाव की यह प्रशस्ति यहाँ उद्धृत करने योग्य है -

संख्यावदिद्भर्नसंख्यानिरवधिरुदिता नो वियल्लेख्य लक्ष्मीः
यद्दत्ते भौमिरम्भोनिधिरधिमलिनैर्यावदापूरितोऽयं ।
व्यक्तं नक्तं दिवं नो लिखति दशशतस्फीतहस्तसमस्तं
श्री कुम्भ क्षोणिमर्त्तर्गुणगण भवनौ को विनिर्णेतुमिष्टे ।।

महाराणा कुम्भा कालजयी व्यक्तित्व के धारक हैं। इसलिए नहीं कि वे राजनीतिक दृष्टि से शासक रहे, कुम्भा के व्यक्तित्व की कई विशेषताएँ हैं, जो यह कहने के लिए पर्याप्त हैं कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक इत्यादि दृष्टियों से भी वे भारतीय शासकों में श्रेष्ठ कोटि के नराणां च नराधिपम् रहे हैं। जिन संकल्पनाओं को कुम्भा ने संजोया, वे कभी अतीत नहीं हो सकती, जिन आदर्शों को उन्होंने आत्मसात् किया, वे कभी पराङ्मुख नहीं हो सकते। इसीलिए कुम्भा के व्यक्तित्व को कालातीत रूप से देखना होगा। शासकीय-व्यक्तित्व की जो भारतीय अवधारणाएँ मध्यकाल में कुम्भा ने प्रस्तुत की उन्होंने कुम्भा को मरणभय से मुक्त बना दिया है और यश रूपी काया को कभी जरावस्था या मरणजन्यभय नहीं सता सकता है, जैसा कि भर्तृहरि ने कहा है -

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।
नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम् ।।

| | ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 3, May 2022 |

निष्कर्षतः कुम्भकर्ण प्रणीत सभी रचनाओं की उपलब्धि, प्रकाशन तथा अध्ययन उनके समग्र व्यक्तित्व के मूल्याङ्कन हेतु परमावश्यक है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ - सूची

1. उदयपुर राज्य का इतिहास - राय बहादुर, गौरीशंकर, हीराचंद ओझा, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
2. नाट्यशास्त्र का इतिहास - डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
3. पाठ्यरत्नकोश - मेदपाटेश्वर श्री कुम्भकर्ण प्रणीत, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
4. महाराणा कुम्भा और उनका काल - डॉ तारामंगल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
5. मेवाड़ का संस्कृत साहित्य - डॉ. चन्द्रशेखर पुरोहित नाग प्रकाशन, दिल्ली
6. संगीत एवं शोध प्रविधि - डॉ. मनोरमा शर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़
7. स्मारिकाएँ - महाराणा कुम्भा संगीत परिषद, उदयपुर
8. संगीतराज - नृपति कुम्भकर्ण - प्रेमलता शर्मा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय प्रेस, वाराणसी
9. शोध पत्रिकाएँ - उदयपुर